सनातन संस्कृति में पर्यावरणीय चेतना

–डॉ. सीमा सिंह एवं मोहित यादव*
शोधच्छात्र : संस्कृत, वी.ब. सिंह पूर्वांचल वि.वि. जौनपुर (उ.प्र.)
*असि. प्रोफे. एवं विभागाध्यक्ष : संस्कृत
राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर (उ.प्र.)

कर्मकाण्ड प्रधान ब्राह्मण ग्रन्थों में मुख्यतः यज्ञों का निरूपण और इनकी अनुष्ठान् विधियों का वर्णन है। शतपथ ब्राह्मण (1/7/1/5) में यज्ञ को प्रजापति और प्रजापति को ब्रह्म कहा गया है। इससे स्पष्ट होता है कि यज्ञ और ब्रह्म दोनों एक हैं अर्थात् ब्रह्म के प्रतिपादक ग्रन्थ होने के कारण ही उन्हें ब्राह्मण नाम दिया गया है।

प्रत्येक मंत्र के अलग–अलग ब्राह्मण हैं। सम्प्रति केवल 18 ब्राह्मण ही उपलब्ध हैं। ऋग्वेद संहिता से सम्बद्ध 'ऐतरेय' और 'कौषीतकी ब्राह्मण है। यजुर्वेदी संहिता, ब्राह्मण और अनुक्रमणिका में कोई अन्तर नहीं है। कृष्ण यजुर्वेद की मैत्रायणी और काठक संहिताओं के परिशिष्ट अंश भी एक प्रकार के ब्राह्मण ही हैं। आपस्तम्भ और आत्रेय शाखा के ब्राह्मण ग्रन्थ का नाम तैत्तिरीय ब्राह्मण तथा शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन और काण्व शाखाओं के ब्राह्मण ग्रन्थ का नाम 'शतपथ' है। ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से इस ग्रन्थ का विशेष महत्त्व है।

सामवेदन की तीन शाखाएँ उपलब्ध हैं– कौथुमीय, जैमिनीय और रामायणी। कौथमीय शाखा के ब्राह्मण–ग्रन्थों के नाम हैं 'पंचविंश ब्राह्मण', 'षड्विंश ब्राह्मण', 'अद्भुत ब्राह्मण', 'मन्त्र ब्राह्मण' और 'छान्दोग्य ब्राह्मण'। छान्दोग्य ब्राह्मणकोठी 'छान्दोग्य उपनिषद्' के नाम से जाना जाता है। सामवेद की दूसरी जैमिनीय शाखा के दो ब्राह्मण ग्रन्थ हैं, जिनके नाम हैं– जैमिनीय ब्राह्मण और जैमिनीय उपनिषद ब्राह्मण। तीसरी रामायणीय शाखा का कोई ब्राह्मण ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। अथर्ववेद संहिता का केवल 'गोपथ' नामक ब्राह्मण ग्रन्थ उपलब्ध है। इसे वेदान्त श्रेणी के ग्रन्थ के रूप में भी जाना जाता है।[1]

लोक विश्वास का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। ब्राह्मण में यावत् वस्तुएँ दृष्टिगोचर होती हैं। इस जगत् में जितनी वस्तुएँ उपलब्ध होती हैं, उनमें से प्रत्येक के सम्बन्ध में कोई न कोई पर्यावरणीय लोक विश्वास निश्चित रूप से प्रचलित है। आकाशीय पिण्डों में सूर्य, चन्द्रमा, शनि, मंगल, सप्तर्षि मण्डल आदि ग्रहों की गणना की जाती है। पृथ्वी पर स्थित वस्तुओं में नदियाँ, पर्वत, तालाब, कूप, वापी, ताल–तलैया आदि परिगणित हैं। प्राणिजगत् सम्बन्धी वस्तुओं को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है–

1. पशु–पक्षी सम्बन्धी पर्यावरणीय लोकविश्वास
2. वनस्पति जगत् सम्बन्धी लोकविश्वास

पशुओं में गाय, बैल, घोड़ा, हाथी, कुत्ता, बिल्ली आदि तथा पक्षियों में कौआ, मोर, गिद्ध, गौरैया आदि के विषय में अनेक पर्यावरणीय लोक विश्वास जन–सामान्य में पाये जाते हैं। वनस्पतियों में आम, पीपल, बरगद, महुआ और नीम की गणना बड़े आदर के साथ की जाती है। इन सभी पशु–पक्षियों और वृक्ष–लताओं के सम्बन्ध में अनेक लोक विश्वास ब्राह्मण ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं।[2]

हिन्दू धर्म विश्व का सबसे अधिक वैज्ञानिक दृष्टि से सम्पन्न धर्म है, जिसके चलते आज सम्पूर्ण विश्व के लोगों की निगाहें इस पर एक आशा भरी दृष्टि से टिकी हैं। यहाँ पर हिन्दू धर्म से हमारा तात्पर्य ऐसी विचारधारा और जीवन दृष्टि से है जो प्राचीनकाल से यहाँ के लोगों द्वारा अपनायी जाती रही है, जिसमें वैदिक, जैन, बौद्ध, सिक्ख, आर्य समाज आदि सभी मतावलम्बी आते हैं। हिन्दू धर्म अन्य धर्मों की भांति पंथ या सम्प्रदाय नहीं, जो किसी ग्रन्थ या व्यक्ति विशेष द्वारा संचालित हो। इस धर्म में ईश्वर को मानने वाला आस्तिक है तो ईश्वर को न मानने वाला नास्तिक भी। इस धर्म में शुद्ध शाकाहारी जैन और वैष्णव हैं तो खाद्य–अखाद्य सब कुछ खाने वाले शैव और शाक्त भी। इस धर्म में संसार का परित्याग करने वाले संन्यासी और भिक्षु हैं तो घर–गृहस्थी में रहकर अध्यात्म की सर्वोच्च ऊँचाई को प्राप्त करने वाले कबीर, रेदास, नानक आदि संत भी। इस धर्म में संसार को ही सब कुछ मानने वाला चार्वाक दर्शन है तो संसार को मिथ्या कहने वाला अद्वैत वेदान्त भी। इस धर्म ने अपने साथ–साथ अन्य धर्मों का भी सम्मान किया है। इसीलिए बीसवीं सदी के हिन्दू धर्म के सबसे बड़े प्रतिनिधि स्वामी विवेकानन्द ने कहा है– ''संसार के सभी धर्म ईश्वर से मिलाते हैं जैसे सभी नदियाँ अंत में समुद्र में आकर मिलती हैं।'' उनके गुरू स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने प्रत्येक धर्म के माध्यम से ईश्वर का साक्षात्कार करके दिखाया भी था। इसी धर्म की उद्घोषणा है–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्ति मा कश्चिद् दुःख भागभवेत्।।[3]

हिन्दू धर्म को ही केन्द्र में रखकर महर्षि कणाद् ने अपने वैशेषिक सूत्र में धर्म को परिभाषित करते हुए लिखा है– ''यतोऽभ्युदय निःश्रेयस् सिद्धि सः धर्मः।''[4] अर्थात् जिससे अभ्युदय (भौतिक उन्नति) और निःश्रेयस (आध्यात्मिक उन्नति) की सिद्धि हो, वह धर्म है। इसी धर्म को परिभाषित करते हुए वेदव्यास जी लिखते हैं–

धारणाद् धर्म मित्याहु धर्मो धारयते प्रजा।
यत्स्याद् धारण संयुक्त सधर्म इतिनिश्चयः।।[5]

मनु जी महाराज लिखते हैं–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।[6]

ब्राह्मण धर्म की अवधारणाओं से उसकी वैचारिक स्वतन्त्रता, उदारता, सहिष्णुता, विश्वबन्धुत्व और मानवतावादी दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। हिन्दू धर्म में 'अहिंसा परमो धर्मः' का आदर्श स्वीकार किया गया है। इसी बात को गोस्वामी तुलसीदास ने 'परम धरम श्रुति विदित अहिंसा''[7] कहा है। परोपकार की भावना को हिन्दू धर्म का सार बताते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं–

परहित धरम सरिस नहीं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।[8]

अरसी मेहता वैष्णवजन की विशेषता बताते हुए अपने एक गीत में कहते हैं कि ''वैष्णवजन तेने कहियो जो पीर पराई जाणे रे।'' यही गांधीजी का आदर्श और प्रिय भजन था जो उनकी प्रत्येक प्रर्थना सभा में गाया जाता था। हिन्दू धर्म के संत की विशेषता बताते हुए तुलसीदास लिखते हैं–

संत ह्रदय नवनीत समाना। कहा कविन पर कहा न जाना।

निज परिताप द्रवहि नवनीता। परदुःख द्रवहि सा संत पुनीता।।[9]

पर दुःख कातरता हिन्दू धर्म की सबसे बड़ी विशेषता है। शिव, दधीचि की कथाएँ इसी परम्परा की पोषक हैं। मनुष्य की बात छोड़िए हिन्दू धर्म में पशु–पक्षियों का भी हित साध्य है। क्रौञ्च पक्षी के दुःख से दुखित बाल्मीकि ने हिन्दू धर्म का आदर्श महाकाव्य रामायण की रचना की है। इस धर्म का ईश्वर भी भक्तों के दुःख को दूर करने के लिए नारायण पद छोड़कर वैकुण्ठ धाम से मर्त्यलोक में नाना रूप धारण करता है। वह मनुष्य रूप ही नहीं धारण करता अपितु अपने भक्तों और लोक कल्याणार्थ मत्स्य, कच्छप, कूर्म, वामन आदि निम्न रूप भी धारण करता है। हिन्दू धर्म की अवतारवादी अवधारणा का आधार ही लोक कल्याण है। ईश्वरी दयालुता का मानवीकरण है। ईश्वर सर्वशक्ति सम्पन्न सामर्थ्यवान है, वह चाहे तो बिना अवतरित हुए भी भक्तों का कष्ट दूर कर सकता है, पर प्रेम का मानवीय रूप जो सामीप्य चाहता है, अपने आराध्य का दर्शन और परसन चाहता है, वह चाहता है कि आततायी और अन्यायी को उसका आराध्य उसके सामने दण्डित करे ताकि दूसरों को आततायी बनने से रोका जा सके। दण्ड का प्रतिरोधात्मक सिद्धान्त ही अवतारवादी मान्यता का अभीष्ट है क्योंकि ईश्वर न्यायप्रिय और दयालु भी है, वह अपने विरोधियों पर भी अप्रत्या रूप से दया करता है उनका उद्धार करता है।

ब्राह्मण धर्म की अवतारवादी धारणा के पीछे वैज्ञानिक विकासवाद की अति प्राचीन अवधारणा छिपी है। ईश्वर के दशावतार में मत्स्य, कच्छप, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि (जो भविष्य में होगा) हैं। ईश्वर का प्रथम समस्यावतार मछली के रूप में होता है, जो केवल जल में ही रह सकती है। कच्छपावतार में कछुआ के रूप में वह पानी और स्थल दोनों में रह सकता है। वाराहावतार में वह वाराह रूप में कछुआ से अधिक विकसित है, शरीर और चेतना दोनों के स्तर पर। नृसिंहावतार में वह पशु और मनुष्य रूप में तो है लेकिन शारीरिक रूप से अविकसित है और परशुराम के रूप में वह शारीरिक शौर्य की पराकाष्ठा है। रामावतार में शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के शौर्य की पराकाष्ठा है। कृष्णावतार को रामावतार से अधिक पूर्ण माना गया है। राम बारह कला के अवतार हैं तो कृष्ण सोलह कला के। कृष्ण योगेश्वर और रासरचइया दोनों एक साथ हैं। कृष्ण को आततायी को मारने के लिए राम की भाँति धनुष पर बाण नहीं चढ़ाना पड़ता है, बल्कि उनकी इच्छा मात्र से सुदर्शन चक्र जाकर सिर काट आता है। बुद्धावतार तो आध्यात्मिकता की पराकाष्ठा है। रामकृष्ण को अत्याचारी को मारने के लिए शस्त्र चलाने पड़ते हैं। पर बुद्ध के आगे आततायी का अस्त्र ही नहीं उठता है। उसका हृदय परिवर्तित होकर बुद्धत्व को प्राप्त करता है। कल्कि अवतार भविष्य में होगा उसके विषय में कुछ कहना उपयुक्त नहीं होगा। उपर्युक्त अवतारों के क्रम का यदि हम सिंहावलोकन करें तो पायेंगे कि उनके शारीरिक और मानसिक विकास में एक आरोही वैकासिक क्रम है। अंत में चैतसिक विकास की इतनी उत्कृष्ट पराकाष्ठ होती है कि उसे ईश्वर मान लिया जाता है। जिसने ईश्वर को माना ही नहीं। वास्तव में ईश्वर मानने की वस्तु है ही नहीं, वह तो केवल जाना जा सकता है। बिना जाने ईश्वर को मानने से धर्म में अनेकानेक विकृतियाँ आती हैं जिसका हिन्दू धर्म बुरी तरह से शिकार हुआ। बौद्ध धर्म जो हिन्दू धर्म का एक हिस्सा है, की बौद्धिक प्रवृत्ति की प्रशंसा में वट्रेण्ड रसेल लिखते हैं– ''मैं ईसाई परिवार में पैदा हुआ लेकिन ईसाई नहीं बन सका, क्योंकि जीजस का व्यक्तित्व अवैज्ञानिक है, लेकिन बुद्ध के साथ ऐसा

कुछ नहीं है।''[10] बौद्ध धर्म सोलह आने वैज्ञानिक और बौद्धिक है। आचार्य रजनीश अपने ग्रन्थ 'एसथम्स सनातनों' में लिखते हैं– ''अगर दुनिया में मुसलमान हैं तो ईसा मसीह की वजह से कम ईसाइयों की व्यापारिक कुशलता से ज्यादा। अगर दुनिया में बौद्ध हैं तो सिर्फ बुद्ध के कारण। न कोई जोर–जबरदस्ती की गयी किसी को बदलने के लिए और न आर्थिक प्रलोभन दिया गया। लेकिन जिसके पास भी थोड़ी–सी बुद्धि थी उसको बुद्ध की बात मौजू पड़ी और उसको बुद्ध में रस आया।''

अश्वत्थः सर्ववृक्षणाम् कृष्णः– ''मैं सब वृक्षों में पीपल हूँ।'' गीता में श्री कृष्ण का यह कथन पीपल को सर्वश्रेष्ठता उसके औषधीय गुणों के कारण है। पीपल अन्य वृक्षों की अपेक्षा कई हजार गुना अधिक आक्सीजन देता है। आक्सीजन प्राणि जीवन के लिए कितना आवश्यक है। इस बात को सभी लोग अच्छी तरह जानते हैं। क्योंकि बिना ऑक्सीजन के आधा मिनट भी गुजारना कितना कष्टप्रद होता है। ऑक्सीजन के साथ–साथ पीपल के और भी औषधीय गुण हैं जो उसकी श्रेष्ठता को प्रतिष्ठित करते हैं। इसी से हिन्दू धर्म में पीपल को वासुदेव भगवानृ का निवास स्थान बनाकर उस पर चल चढ़ाया जाता है और पूजा की जाती है। स्कन्द पुराण में कहा गया है कि पुत्र उत्पन्न करने से बड़ा पुण्य कार्य है। तालाब खुदवाना और इन दोनों से बड़ा पुण्य है वृक्ष लगाना। पर्यावरण की शुद्धि के लिए वृक्षों का उपयोग किया जाता है। यदि वृक्ष न हों तो ऑक्सीजन नहीं प्राप्त होगा। सोमवती अमावस्या के दिन स्त्रियाँ स्नान करके, वासुदेव के रूप में इसकी पूजा करती हैं। वे इसकी जड़ में जल चढ़ाकर चन्दन, रोली और फूल से इसकी अर्चना करके 108 बार इसकी प्रदक्षिणा करती हैं। पीपल के वृक्ष की शाखाओं को काटना और इसकी लकड़ी को जलाना निषिद्ध माना गया है, क्योंकि ऐसा करने से इस वृक्ष पर निवास करने वाले देवताओं को कष्ट होता है। क्योंकि वृक्ष वर्षा कराने में सहयोगी के साथ भूमि का कटाव और वायु प्रदूषण को भी रोकता है। तुलसी का वृक्ष तो हर हिन्दू परिवार के घर के सामने या आंगन में लगा देखने को मिलता है। तुलसी का पत्ता पानी में डालने से पानी वैज्ञानिक दृष्टि से शुद्ध हो जाता है। तुलसी का पौधा दिनों–रात ऑक्सीजन छोड़ता है। नीम, हल्दी आदि का हिन्दू धर्म में उसके औषधीय गुण के चलते अधिक धार्मिक महत्त्व है। नीम के पेड़ पर चेचक के रोग की अधिष्ठात्री देवी शीतला का निवास माना गया है। अतः इस रोग में इस वृक्ष की पत्तियों का उपयोग अनेक प्रकार से किया जाता है। इन पत्तियों को रोगी की शैया पर बिछाकर इससे पंखा झला जाता है। नीम की पत्तियों का उपयोग भूत–प्रेत को भगाने के लिए भी किया जाता है जब कोई व्यक्ति प्रेत–बाधा से आविष्ट होता है तो उस भूत को भगाने के लिए उस व्यक्ति को नीम की पत्तियों की धुआँ देते हैं।

सभी वृक्ष कार्बनडाइऑक्साइड से अपना भोजन बनाकर उसकी मात्रा को कम करने के साथ ऑक्सीजन छोड़ते हैं। वृक्षों द्वारा अच्छी बरसात करायी जाती है। इस प्रकार वृक्ष, वायु प्रदूषण रहित गृह प्रभाव को रोककर वातावरण को स्वच्छ और स्वस्थ बनाये रखते हैं। इसी कारण वेदों में 'वनस्पतयः शान्ति'[11] कहकर वृक्षों की स्तुति की गयी है।

जीवनदायिनी वायु जीवन के लिए अति आवश्यक है। पंचप्राणों से मनुष्य शरीर ही संचालित होता है। ये पंचप्राण हैं– उदान, व्यान, प्राण, समान और अपान। इन्हीं पर नियंत्रण हठ योग की साधना है। प्राण वायु ऑक्सीजन के कारण ही पृथ्वी पर जीवन सम्भव हुआ है, जबकि इसी आक्सीजन के अभाव में अन्य ग्रहों पर जीवन नहीं पाया जाता है। हिन्दू धर्म में वायु को

देवता[12] के रूप में पूजा गया है। वायु को शुद्ध करने के लिए घी का दीपक जलाते हैं। घी का दीपक पूरे घर की वायु को शुद्ध कर देता है। प्राणों पर नियंत्रण करके हिन्दू धर्म में कुण्डलिनी जागृत करके परम शिव का साक्षात्कार किया जाता है। हिन्दू धर्म में वायु प्रदूषण को दूर करने के लिए वायु मण्डल को शुद्ध करने के लिए अनेक उपाय अनाये जाते हैं, उसमें यज्ञ का धुआँ प्रमुख है।[13]

प्रकृति पूजा हिन्दू धर्म में प्राचीनकाल से की जाती रही है। वैदिक मंत्रों में नदी, पहाड़ा, बादल, ऊषा, सूर्य, चन्द्रमा आदि की स्तुति की गयी है और अपनी आवश्यकता से अधिक उपयोगी और उस पर अधिकार जमाने को पाप कहा गया है। कृष्ण द्वारा गोवर्धन पूजा इसका एक उदाहरण है। इस प्रकार प्रकृति पूजा के पीछे हिन्दू धर्म की पर्यावरणीय संरक्षण की अवधारणा छिपी है।

अन्ततः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि अपनी धार्मिक क्रियाओं के माध्यम से हिन्दू धर्म पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन की बात करता है। पर्यावरण सम्बन्धी शुद्ध वैज्ञानिक चेतना आम आदमी की समझ से बाहर होती है। इसे आम आदमी तक अनिवार्य रूप से पहुँचाने और उसके परिपालन के लिए धार्मिक रूप देना अति आवश्यक है, नहीं तो आज की सरकारों द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए आकूत धन बहाने के बाद भी लोगों द्वारा अन्धाधुन्ध पर्यावरण प्रदूषण किया जा रहा है। पर्यावरण संरक्षण और संवर्द्धन तब तक जनान्दोलन बनाने के लिए उसे हिन्दू धर्म की धार्मिक क्रियाओं का रूप प्रदान करना होगा। इस प्रकार हिन्दू धर्म अपनी मानवतावादी आध्यात्मिक, वैज्ञानिक और पर्यावरण सम्बन्धी अवधारणाओं के चलते विश्व में जब कोई विश्व धर्म बना तो उसका रूप हिन्दू धर्म जैसा ही होगा।

सन्दर्भ सूची

1. वाचस्पति गैरोला : भारतीय संस्कृति और कला, पृ. 45
2. कृष्णदेव उपाध्याय : लोक संस्कृति की रूपरेखा, पृ. 44
3. मनुस्मृति
4. महाभारत, शान्तिपर्व, 105—121
5. मनुस्मृति
6. रामचरितमानस, सर्ग 33 / 22
7. रामचरितमानस, 3 / 9
8. रामचरितमानस, 33 / 79
9. रामचरितमानस, 33 / 26
10. Why I am not Christian.
11. अनाश्रितः कर्मफलं कामं कर्म करोतियः। सः सन्यासी....। गीता अध्याय 6, श्लोक 2।
12. पृथ्वी भूमिः पुत्रोदाऽहं पृथिव्याः। पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तुः।
13. यजुर्वेद 26 / 7, अथर्व. 19 / 9 / 14

●